जीरे की प्रमुख बीमारियां तथा उनका प्रबंधन

कृषि कुंभ (अगस्त, 2023),
खण्ड 03 भाग 03, पृष्ठ संख्या 20–21

जीरे की प्रमुख बीमारियां तथा उनका प्रबंधन

दीपक मौर्या[1], निशा[1], पंकज सिंह[2] एवं राम अजीत चौधरी[3]

[1,2]सहायक प्राध्यापक, कृषि विज्ञान विभाग,
श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़, राजस्थान
[3]शोध छात्र, पादप रोग विज्ञान विभाग, सरदार वल्लभभाई कृषि एवं प्रोधोगिकी विश्वविद्यालय, मेरठ
[4]सहायक प्राध्यापक, कृषि विज्ञान विभाग, जे बी आई टी कॉलेज ऑफ एप्लाइड साइंसेस, देहरादून, उत्तराखंड, भारत।

Email Id: deepakmourya1096@gmail.com

विभिन्न बीजीय मसाला फसलों में जीरा अल्पसमय में पकने वाली प्रमुख नकदी फसल हैं। जीरे के दानों में पाये जाने वाले वाष्पषील तेल के कारण ही इनमें जायकेदार सुगध होती है। इसी सुगन्ध के कारण जीरे का मसालों के रूप में उपयोग किया जाता है।

जीरे में यह विषिष्ट सुगंध क्यूमिनॉल या क्यूमिन एल्डीहाइड के कारण होती है। इसका उपयोग मसाले के अलावा औषधि के रूप में भी होता हैं, जीरे में मुत्रवर्धक, वायुनाषक, व अग्निदीपक गुण पाये जाते हैं। इन गुणों के कारण कई देषों में आयुर्वेदिक दवाओं में जीरे का उपयोग बढ़ता जा रहा है।

भारत में जीरे की खेती अधिक नमी वाले क्षेत्रों को छोड़कर देष के सभी राज्यों में की जाती है। जीरे के कुल क्षेत्र व उत्पादन का लगभग 90 प्रतिषत भाग राजस्थान व गुजरात के अन्तर्गत आता है। देश के कुल उत्पादन का 48 प्रतिषत जीरा राजस्थान में होता है। राजस्थान के जालौर, बाड़मेर, पाली, अजमेर, जौधपुर, नागौर, टोंक व जयपुर जीरा उत्पादन करने वाले मुख्य जिले है।

जीरे के प्रमुख रोग–

1. झुलसा रोग (फफूंदः अल्टरनेरिया बुर्नसी)

लक्षण : प्रभावित पौधों की पत्तियों एवं तने पर प्रारंभ में गहरे भूरे रंग के धब्बे बनते हैं, रोग तेजी से बढ़ता है पहले टहनी व फिर पूरा पौधा तेजी से झुलस जाता है, फसल में फूल शुरू होने के बाद अगर आकाश में बादल छाए रहते हैं तब रोग के लिए अनुकूल वातावरण रहता है तथा इस रोग का अधिक संक्रमण होने पर बीज नहीं बनता यदि बीज बना भी जाता है तो पिचका हुआ हल्के रंग का होता है, अंत में फसल झुलस कर पूरी तरह नष्ट हो भी हो सकती है।

उपचार : बुवाई के 30 से 35 दिन बाद फसल पर थायोफनेट मिथाइल 70 डब्ल्यू. पी. या मेन्कोजेब या जाईरम का 2.0 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें, आवश्यकतानुसार, 10– 15 दिन के अंतराल पर छिड़काव को दोबारा

करें, झुलसा व छाछिया दोनों रोगों के एक साथ नियंत्रण के लिए जाइनेब 68 %. हेक्साकोनाजोल 4% के बने हुए मिश्रण का 2 ग्राम प्रति लीटर या मेटीराम 55 %. पैराक्लोस्ट्रोबिन 5% के बने मिश्रण या 3.5 ग्राम प्रति लीटर या पैराक्लोस्ट्रोबिन 13.3 % एपोक्सिकोनाजोल 5% के बने मिश्रण का 1.5 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें आवश्यकतानुसार 15 दिन के अंतराल पर दोबारा छिड़काव करें।

2. म्लानि या उखटा रोग (फफूंदः फ्यूजेरियम ओक्सीस्पोरियम फाँ. श्पे. कोरीयेनडरी)

लक्षण : यह रोग जीरे की गंभीर बीमारी है, यह पौधे की किसी भी अवस्था में दिखाई दे सकता है, पर इसका संक्रमण छोटे व कम उम्र के पौधों पर अधिक होता है तथा प्रभावित पौधा मुरझा कर सूख जाता है जड़ फाड़कर देखने पर पिथ काले रंग का संक्रमित में दिखाई देता है यह रोग पौधों की जड़ों में लगता हैं, इसकी पूर्णतया रोकथाम कठिन होता है।

उपचार : ग्रीष्म कालीन गहरी जुताई करें, बुवाई के पूर्व 2.5 किलोग्राम ट्राइकोडर्मा, 100 किलोग्राम गोबर की खाद के साथ मिलावे, बीजों को 2 ग्राम कार्बेंडाजिम से उपचारित करके बुवाई करें या डेढ़ सौ किलोग्राम नीम की खली बुवाई से पूर्व एक हेक्टेयर में मिलावे या 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम. 6 ग्राम ट्राइकोडर्मा 10% नीम अर्क को प्रति किलोग्राम बीज से उपचारित करने से रोगों को कम किया जा सकता है

3. चूर्णिल आसिता या छाछिया रोग (फफूंदः इरिसिफी पोलिगोनी)

लक्षण : यह रोग एरीसीफी पोलीगोनी नामक कवक से होता हैं। इस रोग की प्रारम्भिक अवस्था में पौधों की पत्तियों व टहनियों पर सफेद चूर्ण नजर आता हैं। धीरे– धीरे सफेद चूर्ण पूरे पौधें पर ही फैल जाता हें, जिससे पोधे की वृद्वि रूक जाती है। रोगी फसल में बीज बनते ही नही बनते है तो कम व हल्के बीज बनते हैं। प्रारम्भिक अवस्था में रोग आने पर पूरी फसल नष्ट हो जाती है। तथा देरी से आने पर बीजों की विपणन गुणवत्ता पूर्णतया कम हो जाती है।

उपचार : यदि रोग के लक्षण दिखाई दें तो घुलनशील गंधक 2.5 किलोग्राम अथवा केराथेन 400 मिलीलीटर घोल का प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें। आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अंतराल पर छिड़काव को दोबारा करें । झुलसा छाछिया दोनों रोगों के एक साथ नियंत्रण के लिए जिनेब 68 %, हेक्साकोनाजोल 4%, के बने हुए मिश्रण का 2 ग्राम प्रति लीटर या मेटीराम 55% पैराक्लोस्ट्रोबिन 13.5% बने मिश्रण का 1.5 ग्राम प्रति लीटर पेट्रोल प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।